# कर्बला की शेरदिल बहेन

अदीबा—बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी साहिबा
अ[illegible]द[illegible]हीब नगरौरी

ख़ुतब–ए–ज़ैनब ने तख़्तो ताज की
ज़ुल्म के हाथों से शौकत छीन ली
छिन गई चादर तो क्या? महशर तलक
तालिबे बैअत की हिम्मत छीन ली
(असीफ जाएसी)

यह एक हक़ीक़त है कि दुनिया के ज़्यादातर लोगों ने औरत को कमज़ोर और नाज़ुक समझकर बुज़दिल मान लिया है। और वह ख़ुद अपने को ताक़तवर होने की वजह से शेरदिल समझते हैं लेकिन यह भी हक़ीक़त है कि वह ताक़तवर और कमज़ोर के मतलब को सही तौर पर नहीं समझ सके इसलिए ज़रूरी नहीं है कि हर कमज़ोर बुज़दिल हो और हर ताक़तवर शेरदिल। दुनिया और आदम की तारीख़ गवाह है कि मैदानों से बड़े–बड़े मर्द सूरमाओं के पैर उखड़ गये और अहम जंगों में बहादर और हिम्मत वाली औरतों ने जंग की। लेकिन यह भी सही है कि जब भी औरतों की दुनिया में बहादुरी, हिम्मत, सच्चाई, हक़गोई और बेबाकी के नमून–ए–अमल (Ideal) की ज़रूरत होगी तो यक़ीनन पूरी दयानतदारी के साथ कर्बला का मुजाहेदा ही हक़ बयानी और जुराअते इज़्हार का मदरसा ठहरेगा।

जहाँ सैयिदुश्शोहदा इमामे कौनैन हज़रत हुसैन (अ0) हमारी जाने उन पर क़ुर्बान हों, और उनके रिश्तेदारों और साथियों की शेरदिल औरतें अपनी बहादरी और हिम्मत के ऐसे सख़्त निशान दुनिया में छोड़ देती हैं जिन्हें दुनिया क़यामत तक मिटा नहीं सकती।

हाँ उन्हीं बहादर औरतों की सरदार का पाक नाम ज़ैनबे कुबरा है जिन्हें ''कर्बला की शेरदिल औरत'' के लक़ब से आए दिन ज़बान व क़लम से याद किया जाता है।

हुसैन (अ0) मज़लूम की यह वह दुखियारी बहन है जिसने तमाम तकलीफें बर्दाश्त करने के बाद भी हुसैन (अ0) की मदद में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। और जी–जान लगाकर हुसैन (अ0) के मक़ासिद की हिफाज़त का काम अन्जाम दिया। जिस घर की कनीज़ें आलिमा और फाज़िला हों वहाँ की बेटियों का क्या कहना और फिर फातिमा (स0) की बेटी जो आलिम–ए–ग़ैर मुअल्लिमा भी है, जिसने लोगों को क़ुर्आन का दर्स दिया। इस्लाम से पहचान करवाई। यही ज़ैनब बिन्ते अली (अ0) हैं कि जब इस्लाम पर बुरा वक़्त आ पड़ा तो ख़ुदा के दीन के लिए तमाम मुसीबतों और परेशानियों का सामना करने को तैयार हो गयीं। यही वह वक़्त था जब हुसैन मज़लूम (अ0) को यज़ीद ने ख़त भेज कर मदीने से अपनी बैअत के लिये बुलवाया था ज़ैनब ने जब सुना हुसैन (अ0) को यज़ीद ने तलब किया है और हुसैन सफर का इरादा करते हैं तो चाहने वाली बहन बच्चों को लेकर भाई के साथ सफर के लिये तैयार हुईं।

ग़रज़ हुसैन (अ0) रास्ते की तकलीफों को बर्दाश्त करते हुए कर्बला पहुँचे जहाँ ज़ुल्म व सितम करने वाली फौजों ने हुसैन इब्ने अली (अ0) का घेराव कर लिया। और पुराने सिलसिले

की तजदीद जारी रही कि बैअत कर लो वरना क़त्ल कर दिये जाओगे। लेकिन अली (अ0) के लाल के लिये ये कैसे मुमकिन था कि फासिक़ व फाजिर के हाथों पर बैअत कर लें। साथ ही ऐसे फ़साद भरे माहोल में कुरैश की अक़्लमन्द जनाबे ज़ैनब (अ0) के हिम्मत बढ़ाने वाले मशवरे भी काम कर रहे थे कि भैय्या अम्मा की खेती बर्बाद हो जाए लेकिन नाना का दीन न मिटने पाए।

हुआ भी वही जब इमाम सैयिदुश्शोहदा (अ0) के तमाम चाहने वाले ख़ुदा की राह में कुर्बान हो चुके मर्दों में सिवाए आबिदे बीमार (अ0) के कोई बाक़ी न बचा तो ज़हरा (स0) का लाल ख़ेमें में बीबियों से आख़िरी रुख़सत के लिए आया और बीबियों को सलामे आख़िर करके मक़तल की तरफ जाने का रुख़ किया कि चाहने वाली ग़मज़दा बहन ने बढ़कर आवाज़ दीः ''ज़हरा (स0) के बेटे आहिस्ता चलिये।'' हुसैन (अ0) ठहर गये पीछे मुड़कर देखा चाहने वाली बहन है। पूछा क्या बात है?

सानिये ज़हरा (स0) ने कहा अम्माँ की वसिय्यत याद आ गई। अम्माँ ने कहा था जब मेरी गोद का पाला हुसैन (अ0) आख़री वक़्त ख़ुदा हाफज़ी के लिये ख़ेमे में आए तो मेरी तरफ से हुसैन (अ0) की मुबारक गर्दन को चूम लेना। भैइया! गले से रूमाल हटाइये। ज़हरा (स0) के लाल ने रूमाल हटाया। ज़ैनब ने गले को चूमा। हुसैन (अ0) को भी माँ की वसिय्यत याद आई और कहा बहन तुम भी बाज़ुओं से चादर हटाओ। ग़रज़ हुसैन ने भी उन बाज़ुओं को चूमा और कहा बहन मेरे बाद इन बाज़ुओं में रस्सी बंधेगी।

हाए अफसोस कर्बला में हुसैन (अ0) का मुबारक सर तन से जुदा करके नेज़ों पर उठाया जा रहा है बहन ख़ड़ी देख रही है। जिसने अपने जिगर के टुकड़ों को भाई पर फिदा होने के लिये मैदाने क़त्ल में में भेजा था ताकि माँ का बेटा बच जाए और नाज़ों के पाले औन व मुहम्मद शहीद हो जाएँ। इन हालात में भी ज़ैनब परेशान नज़र नहीं आतीं। मुसीबतों और परेशानियों में गिरफ्तार होने के बाद भी ज़िम्मादारी से अन्जान नहीं हैं। सुब्ह से शाम तक हुसैन (अ0) और उनके साथियों पर मातम करने वाली बहन सैयिदे सज्जाद और अहले हरम की हिफाज़त को अपना वज़ीफा समझ रही है।

क्योंकि चलते वक़्त हुसैन (अ0) ने जनाब ज़ैनब से कहा थाः ज़ैनब! मेरी शहादत के बाद क़ाफले वालों की हिफाज़त करने वाली तुम हो। यतीम बच्चों को तसल्ली देना तुम्हारा काम है। मेरा बीमार बेटा इमामे वक़्त तुम्हारे हवाले है। मेरी चहीती सकीना का हर लम्हे ख़याल रखना तुम्हारी ज़िम्मादारी है।

हुसैन (अ0) की शेरदिल बहन ने भाई की वसिय्यत के मुताबिक़ क़ाफले की बेहतरीन सरदारी की। जब शामेग़रीबाँ आई। हुसैनी ख़ेमों में आग लगा दी गई, अली की लाडली बेटी ज़ैनब (स0) ने हुज्जत पूरी करने के लिए इमामे वक़्त से मसअला मालूम किया।

ऐ बेटा! तमाम ख़ेमे जल रहे हैं इस आलम में इमामत की मसलहत क्या है? ख़ेमों में रहें और जल जाएँ या ख़ेमों से बाहर निकल जाएँ।

इमामे सज्जाद ने बाहर निकल जाने का हुक्म दिया। बिन्ते ज़हरा (स0) ने इमाम के हुक्म की तामील की और ख़ासकर जनाब आबिदे बीमार को जलते हुए ख़ेमों से बाहर ले आईं। ग्यारहवीं मुहर्रम की रात में जब अहले हरम को शुमार करते वक़्त सकीना नज़र नहीं आईं तो

अपनी मददगार बहन जनाब उम्मे कुलसूम को साथ लेकर हैबतनाक जंगल में सकीना की तलाश में निकलीं। आवाज़ दे रही थीं कि एक गढ़े से आवाज़ आई ज़ैनब (स0) सकीना यहाँ है।

ग़र्ज़ कि यह दोनों बहने सकीना बिन्ते हुसैन (अ0) को लेकर आईं। दूसरे दिन अहले हरम को क़ैद करके कूफा ले जाया गया और कूफे में फिराने के बाद शाम ले जाया गया लेकिन हुसैन (अ0) की मज़लूमियत को फैलाने वाली ने जुल्म के ख़िलाफ ज़बरदस्त एहतेजाज और हुसैनी मक़ासिद को फैलाने में बड़ी कोशिश फरमाई।

अगर हुसैन (अ0) ने ''ला इलाहा इल–लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' के लिये अपनी जान को ख़ुदा के रास्ते में कुर्बान कर दिया तो सानिये ज़हरा ने भी ''ला इलाहा इल–लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह'' को बाक़ी रखने के लिए कर्बला से कूफा और कूफे से शाम तक रस्सियों में बंधा रहकर मुसीबतों को बर्दाश्त किया। जब यज़ीद के दरबार में अहले हरम को लाया गया तो यज़ीदे मलऊन ने जो शाही तख़्त पर बैठा हुआ अहले हरम के सामने हुसैन (अ0) के सर की बेअदबी कर रहा था कि एक शामी ने बीबियों की तरफ इशारा करते हुए पूछा यह कौन बच्ची है? यज़ीद ने कहा यह हुसैन की बेटी फातिमा है। उस शामी मर्द ने कहा। इस बच्ची को मेरी कनीज़ी में दे दो जेसे ही हुसैन (अ0) की शेरदिल बहन ने उस शामी मर्द से गुस्ताख़ी का जुमला सुना। उस बदबख़्त से इशारा करते हुए कहाः किसकी मजाल है कि हुसैन (अ0) की औलाद को कनीज़ बनाए। हम उस मज़हब की बुनियाद रखने वाले घर के लोग हैं जिन्होंने कुर्आन की हिफाज़त की और इस्लाम को बर्बाद होने से बचाए रखा।

सानिये ज़हरा (स0) ने भरे मजमे में अली के लहजे में बहादराना अन्दाज में ऐसी ज़ोरदार तक़रीर की कि तमाम तमाशाइयों के मुँह बन्द हो गये। ज़ैनबे कुबरा ने अपने ख़ुतबे के ज़रिये लोगों को बता दिया कि अली की बेटी, रसूल (स0) की नवासी, फातिमा (स0) की नूरे नज़र और हुसैने मज़लूम की हमदर्द बहन जुल्म के तूफ़ान और ज़्यादती से नहीं डरती।

बहुत ही बहादुरी के साथ यज़ीद जैसे हाकिम जाबिर से कहती हैंः ''सारी तारीफ और हम्द परवरदिगारे आलम के लिए है और दुरूद व सलाम है आख़री नबी (स0) पर कि जिसकी आल को शहादत का रुतबा मिया। ऐ यज़ीद! हम रसूल की इज़्ज़त को सताकर तुझे क्या मिल गया, अगर तू यह समझता है कि तूने हमें क़ैद करके, शहर–शहर फिराकर हमारी इज़्ज़त में कुछ कमी कर दी है तो ऐसा हरगिज़ नहीं है।

अगर तेरा गुरूर तेरी हुकूमत के फैल जाने पर है तो जान ले कि रोज़े जज़ा व सज़ा (क़यामत) तुझे तेरी हक़ीक़त मालूम हो जाएगी कि जिस दिन एलान होगा कि ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत हो।

यक़ीनन तेरी हुकूमत ख़त्म होने वाली है, जमाअत भाग जाने वाली और राए बेकार है। बस हर हाल में अल्लाह की हम्द है जिसकी तरफ तमाम मामलों को लौटना है जो हमारे कामों का बनाने वाला है।

बहरहाल हज़रत ज़ैनब (स0) ने अपनी मर्ज़ी और शख़्सियत को माबूद की मर्ज़ी में फ़ना कर दिया और मुसीबतों और परेशानियों में होने के बाद भी हक़ीक़ी माबूद की हम्द व सना (तारीफ़) और अपने भाई का तज़किरा करती रहीं। हमेशा भाई को याद करके रोती रहीं।

**बक़िया पेज न0 39 पर**

ही औलाद समझता है जैसे बेटे को समझता है और जब उसकी शादी हो जाती है और बच्चे हो जाते हैं तो फिर उसे औलाद की माँ समझता है। कुर्आन मजीद ने अरब के बद्दुओं (जंगली असभ्य लोग) से अपना (खुदा का) नाराज़ होना दिखाया है जो अपनी लड़कियों को जीते जी मिट्टी में दफन कर देते थे। उन्हें जुल्म वाले इस बुरे काम पर बुरी तरह मना किया हैः

'अपनी लड़कियों को रोज़ी की कमी (ग़रीबी) की वजह से मार न डालो। (सूरा 'इनआम' 151)

इस आयत में बेटी को साफ–साफ औलाद कहा गया है। यह इतिहास और भटके हुए लोगों का मुहँतोड़ जवाब है।

औरत अपने बच्चों की माँ है। कुर्आन मजीद में हैः

''माँओं को चाहिए कि वे अपने बच्चों को पूरे दो साल तक दूध पिलायें।''( सूरा 'बक़रा' 233)

कुर्आन में हज़रत मूसा (अ0) के बारे में हैः 'हमने मूसा (अ0) की माँ पर वहि की।'

रसूल (स0) हज़रत फातिमा (स0) के बारे में कहते हैंः

फातिमा मेरा टुकड़ा है।

(बिहारुल अनवार भाग–42 पृष्ठ–23)

दूसरी रिवायतों में आया हैः

हमारी औलाद चाहे बेटा हो या बेटी हमारे जिगर हैं। (सफीनतुल बिहार भाग–8 पृष्ठ–80)

औरत की औलाद बेखटके उसके बाप के नवासे (नवासी) हैं। रसूल के नवासे के रूप में इमाम हसन (अ0) और इमाम हुसैन (अ0) की पहचान इतिहास या उन लोगों की खुली काट है जो नवासे (नवासी) को नाना की औलाद नहीं मानते।

इस्लाम धर्मशास्त्र (फिक़्ह) में वे सभी लोग रसूल (स0) के रिश्तेदार है जिनकी माँ सैदानी हैं बल्कि शीओं के बड़े मर्जा (महान–धर्माचार्य) सैयद मुर्तज़ा का तो फतवा था कि उसको भी खुम्स दिया जा सकता है जो माँ की ओर से रसूल से रिश्ता रखता है।

मरने से औरत मिटती नहीं बल्कि मर्द ही की तरह वह भी बाक़ी रहती है और उसके लिए भी अमर जीवन है। खुदा की इबादत होने पर वह हमेशा जन्नत में रहेगी और अगर उसकी इबादत से दूर होगी तो सदा के अज़ाब में रहेगी। कुर्आन मजीद की हज़ार से ज़्यादा आयतें इन बातों को साफ–साफ बताती हैं। **(जारी)**

---

**बक़िया............कर्बला की शेर दिल बहेन**

क्योंकि उन्हें मालूम था कि हुसैन मज़लूम पर रोना कि जिसने अपनी ज़िन्दगी ख़ुदा के रास्ते में लुटा दी हो मज़लूमियत को फैलाना, जुल्म के ख़िलाफ एहतेजाज और माबूद की ख़ुशी होकर ऐन इबादत है।

हक़ीक़त में अगर हुसैन (अ0) की शहादत न होती और ज़ैनबे कुबरा (स0) कैद न होतीं तो आज इस्लाम न होता यह हुसैन (अ0) व ज़ैनब (स0) की मेहनतों का फल है कि आज हर तरफ दुनिया में इस्लाम अपनी ठोस बुनियाद और न ख़त्म होने वाली अज़मतों के साथ बाक़ी है। बस अब में अपने मज़मून को अह्सन दानापूरी के मरसिये के एक बन्द पर ख़त्म करती हूँः

चश्मे दुनिया ने कहीं देखी नहीं ऐसी बहेन
ढूँढने वाले बता सकते नहीं कैसी बहेन
शह की माँ फ़ातिमा और फ़ातिमा की जैसी बहेन
मुनफरिद भाई था जैसा मुन्तख़ब वैसी बहेन
भाई ने गर्दन कटाकर हक़ को ज़िन्दा कर दिया
और बहन ने जुल्म के शोलों को ठण्डा कर दिया